रहस्यमय मंजरी भाव



Braj Bibhuti

Shri Shyam Das Ji

जय श्रीराधे • जय निताई

जय जय श्यामा जय जय श्याम ★ जय जय श्री वृन्दावन धाम

B-18

श्रीचैतन्य महाप्रभु कृपाभिषिक्त श्रीरूप-सनातन आदि
गौड़ीय गोस्वामिगणों द्वारा सर्वप्रथम प्रस्तुत

र ह स्य म य

मंजरी भाव

भावोल्लासा रति

एक सौ से अधिक वैष्णव ग्रन्थों के
लेखक सम्पादक प्रकाशक

व्रजविभूति श्रीश्यामदास

कृपानुभूतिपूर्वक

दासाभास डॉ गिरिराज • डॉ भागवत कृष्ण

भ्रातृद्वय द्वारा सम्पादित

प्रथम संस्करण - 2000 प्रतियाँ - जून 2023

श्रीहरिनाम संकीर्तन मण्डल

श्रीहरिनाम प्रेस, बाग बुन्देला, लोई बाजार, श्रीधाम वृन्दावन-281121

सम्पादकीय

मंजरी भाव एवं भावोल्लास रति—ये दो ऐसी विधाऐं हैं, जो कभी भी, किसी भी अवतार, भगवान्, सन्त, महन्त आचार्य ने अनन्त ब्रह्माण्डों में कभी भी किसी ने प्रदान नहीं की थीं। इसीलिये इसे कहा गया—

अनर्पित चरीं चिरात्

अर्थात् चिरकाल से यह अर्पित नहीं की गयी थी, वह अब श्रीचैतन्य महाप्रभु के नित्य सिद्ध परिकर श्रीरूप आदि गोस्वामि गणों द्वारा प्रदान की गयी—यह गौड़ीय आचार्यों का बहुमूल्यवान् दुर्लभतम उपहार है हम साधकों के लिये। इस बुकलेट में बहुत प्रारम्भिक परिचय जुटा पाया हूँ श्रीराधारानी की कठपुतली बनकर। विशेष जिज्ञासा या आस्वादन सम्बन्धित ग्रन्थों में अथवा गुरु वर्ग से करना श्रेयस्कर होगा। मंजरी भाव विषय को एक बुकलेट में समेटना दुस्साहस है। फिर भी साधकों को प्राथमिक परिचय प्राप्तकर आनन्द होगा—ऐसी आशा है।

श्रीलालाबाबू तिरोभाव तिथि
21 मई 2023

—दासाभास डॉ गिरिराज
पीएचडी., साहित्यरत्न

मंजरी एक भाव है। भाव—भावित होना है।
वेश—वेशित नहीं। मंजरी वेश नहीं बनाना है।

मंजरी भाव अब तक किसी अवतार या भगवान् ने प्रदान नहीं किया था

अनर्पित चरीं चिरात् करुणयावतीर्णः कलौ
समर्पयितुमुन्नतोज्ज्वल रसां स्वभक्तिश्रियम्।
हरिः पुरट-सुन्दर द्युतिकदम्ब सन्दीपितः
सदा हृदय कन्दरे स्फुरतु वः शचीनन्दनः॥

—श्रीरूपगोस्वामीपाद

अर्थ—अनन्तकाल से जिसको किसी ने प्रदान नहीं किया था, उस परम उज्ज्वल रसमयी अपनी भक्ति सम्पत्ति को देने के लिये जो अपनी करुणा से कलियुग में अवतीर्ण हुए हैं, स्वर्णमयी कान्ति राशि से देदीप्यमान वे शचीनन्दन हरि अर्थात् श्रीकृष्णचैतन्यदेव सदा तुम्हारी हृदय कन्दरा में स्फुरित हों।

—विदग्धमाधवनाटक

अनन्तकाल से जिसको प्रदान नहीं किया गया था, वही है **मंजरी भाव**। क्योंकि पुराणों में, निम्बार्क सम्प्रदाय ग्रन्थों में, रामानुज साहित्य में, जयदेव कृत गीतगोविन्द में, रुद्रयामल तन्त्र में, विद्यापति, चण्डीदास आदि की रचनाओं में **सखी या**

सहचरी भाव तो वर्णित है, लेकिन **मंजरी** शब्द एवं भाव का उल्लेख नहीं है।

भक्तिरसामृतसिन्धु एवं उज्ज्वलनीलमणि

गौड़ीयाचार्य श्रीरूपगोस्वामी के कुछ पूर्व एवं परवर्ती समय से **मंजरी** शब्द एवं भाव सुनाई देने लगा। भक्तिरसामृतसिन्धु एवं उज्ज्वलनीलमणि ग्रन्थ में विस्तारपूर्वक मंजरी भाव का वर्णन है।

स्नेह आधारित सखियों के प्रकार

प्रियाप्रियतम की सेवा में प्राणपण से समर्पित सखियां दो प्रकार की हैं—1. समस्नेहा—अर्थात् जो प्रियाजी एवं प्रियतम दोनों से समान स्नेह करती हैं। 2. असमस्नेहा अर्थात् दोनों में समान स्नेह नहीं रखती हैं। ये असमस्नेहा फिर दो प्रकार की हैं—1. राधास्नेहाधिका अर्थात् जो राधा से अधिक स्नेह करती हैं। कृष्ण से कुछ कम स्नेह करती हैं। 2. कृष्ण-स्नेहाधिका अर्थात् ये कृष्ण से अधिक एवं राधा से कुछ कम स्नेह करती हैं।

प्रणय कलह

यहाँ राग-द्वेष नहीं है। जब प्रियाप्रियतम में प्रणय-कलह होता है—जैसे प्रिया जी ने कहा—आज तो श्यामसुन्दर बहुत

सुन्दर लग रहे हैं। तब कृष्णस्नेहाधिका कहती हैं—लग क्या रहे हैं—वे तो हैं ही। शुरू से सन्दर हैं—राधाजी से भी सुन्दर हैं। और राधास्नेहाधिका कहती हैं—प्रिया जी! ये एक तो श्याम हैं, दूसरे त्रिभंग हैं, तीसरे गौपालक हैं—ये कहां से सुन्दर हैं। आदि—

इन दोनों में जो श्रीराधास्नेहाधिका हैं—वे ही मंजरी कहलाती हैं—श्रीरूप मंजरी, लवंग मंजरी, कस्तूरी मंजरी, गुणमंजरी आदि—इनके आनुगत्य में ही भजन किया जाता है।

जो श्रीकृष्णस्नेहाधिका हैं—वे धनिष्ठा आदि सखियां हैं—उनके आनुगत्य में भजन की प्रथा नहीं है। इन मंजरियों के स्थायिभाव को भावोल्लासा रति कहकर भक्तिरसामृतसिन्धु में वर्णित किया गया है।

सखियां 5 प्रकार की हैं—

1. सखी, 2. प्रियसखी, 3. परमप्रेष्ठ सखी, 4. प्राण सखी, 5. नित्य सखी।

नित्य-प्राण

इनमें श्रीराधास्नेहाधिका, प्राणसखी एवं नित्य सखी ही मंजरी है।

- श्रीराधास्नेहाधिका होने से, श्रीराधा सुख-सेवा सम्पादन करने से, श्रीराधा के समान होने से, केवल देहमात्र भेद

होने से, एक प्राण होने से श्रीकृष्ण भी अत्यधिक प्रसन्न होते हैं। श्रीकृष्ण–श्रीराधा युगल उपासना ही श्रेय है मंजरी उपासना का। श्रीराधा की एकान्त प्रसन्नता से ही श्रीकृष्ण की उपासना एवं प्रसन्नता का लक्ष्य प्राप्त होता है। साथ ही कृष्णदासत्व भी पुष्ट होता है।

* मंजरीगण वयसंधि वयसा हैं। 80 प्रतिशत कैशोर 20 प्रतिशत यौवन। किशोर और यौवन का संधि काल है। और ये सुस्निग्ध हैं। ललित हैं। स्वर्णवर्ण हैं। सुगौरी हैं। मधुर शोभा विशिष्ट हैं। निपुणा हैं।

नित्यसिद्ध परिकर एवं साधन सिद्ध

सखी—सहचरियां रागात्मिका परिकर रूप हैं। नित्यसिद्ध परिकर हैं—वे कभी जीव नहीं थीं। साथ ही हमारी जो गुरु रूपा श्रीरूप–लवंग–कस्तूरी आदि मंजरियां हैं—वह भी नित्य सिद्ध रागानुगा परिकर हैं। हम मंजरियां साधन सिद्ध परिकर हैं—जीव रूप में साधन जब सिद्ध अवस्था को प्राप्त होता है तब ये जीव रूप में रहते हुए भी मानसिक रूप से अन्तश्चिंतित देह से सेवा सम्पादन करती हैं। और शरीर त्याग के बाद भी चिन्मय देह से सेवा सम्पादन करती हैं। हमारे सिद्ध बाबा आदि साधन भूमि से सिद्ध भूमि में गये हैं और श्रीरूप मंजरी आदि सिद्ध भूमि से जीव कल्याणार्थ साधन भूमि में आये हैं।

सेवा-सुख ही प्राण है

सखी एवं सहचरियों में सख्य जैसा भाव होता है—माधुर्य रसास्वादन में। लेकिन हम मंजरियां जीव कोटि से आयी हैं—अतः 'जीवेर स्वरूप हय नित्यकृष्णदास' राधा की ही अंशभूता हैं—ललिता-विशाखा की तरह से—लेकिन अपने आपको दासी मानती हैं। और अपने आपको सखी-सहचरियों के अनुगत दासी मानती हैं—और अपनी निश्चित सेवा होते हुए भी—सभी सखियों की आज्ञापालन करती हुई निरन्तर श्रीराधा सेवा में रहती हैं।

संगम-अयोग्य मान्यता

विशेष बात यह भी है कि सखी-सहचरियां श्रीकृष्ण के साथ संगम भी करती हैं—श्रीकृष्ण इच्छा से श्रीकृष्ण के सुख के लिये। स्वसुख की तो गन्ध भी नहीं है। लेकिन मंजरियों में दासी भाव होने से वह ऐसा न तो करती हैं, न सोचती हैं—अपितु श्रीकृष्ण मंजरियों की परीक्षा के लिये कभी उनको छेड़ते हैं पकड़ते हैं तो वे गिड़गिड़ाकर बार-बार 'हम तो आपकी दासियां हैं—हम आपके योग्य नहीं हैं'—ऐसा कह-कह कर अपने को छुड़ाकर भाग जाती हैं। विलाप कुसुमांजलि ग्रन्थ के प्रारम्भ में ऐसी लीला वर्णन है। एक ओर अपने को संगम-अयोग्य कहती हैं। दूसरी ओर वे गर्विणी श्रीराधा की

दासियां हैं—इसलिये ये गर्विणी भी पूरी हैं। श्रीराधा ने यदि श्रीकृष्ण के कुंज प्रवेश के लिये मना कर दिया तो कुंज द्वार पर खड़े रहकर बड़े गर्व के साथ श्रीकृष्ण को किसी भी कीमत पर प्रवेश नहीं करने देती हैं। श्रीराधा तो श्रीकृष्ण को धूर्तराज कहती ही हैं—ये भी धूर्तराज कहने में नहीं सकुचातीं।

इसी प्रकार श्रीराधा को जब कृष्ण विरह होता है तब मंजरियां श्रीराधा के विरह शमन के लिये येन-केन प्रकारेण श्रीकृष्ण को पकड़कर लाके श्रीराधा के समक्ष एक अपराधी की भांति पेश भी कर देती हैं। ये भाव केवल मंजरी भावापन्न साधकों के हृदय में उतरता है। ऐश्वर्य भावापन्न लोगों को यह भाव हजम नहीं होता है। वे कृष्ण को भगवान् मानते हैं। मंजरियां श्रीकृष्ण को परम निकटतम, परम प्रिय, परम निजस्व मानती हैं।

कभी श्रीकृष्ण जब श्रीराधा से मिलने की इच्छा रखते हैं और द्वार पर मंजरियां होती हैं, तब ये सृष्टि नियंता, अखिल लोक चूड़ामणि कृष्ण मंजरियों के चरणों में गिड़गिड़ाते भी हैं—श्रीराधारससुधानिधि में ऐसा वर्णन है। ये मंजरियां 64 कलाओं से परिपूर्ण हैं। निपुण हैं।

अभिनव आविष्कार

यह मंजरी भाव-स्वयं भगवान् श्रीश्रीकृष्णचैतन्य चरणानुग श्रीमत् रूप सनातनादि गोस्वामिपाद गणों का ही अभिनव

आविष्कार है। श्रीमत् रूपगोस्वामिपाद ने गम्भीर भक्ति-रसामृतसिन्धु के दुर्लक्ष्यचर श्रीउज्ज्वलनीलमणि ग्रन्थ में उज्ज्वल रस के श्रेष्ठतम आधार महाभाव स्वरूपिणी ब्रजसुन्दरी गण के मधुर रस की विशेष विवेचना की है। यहीं- इसी ग्रन्थ में उन्होंने मंजरी स्वरूप का परिचय प्रदान किया है। श्रीचैतन्य मनोऽभीष्ट को जानने वाले हैं—श्रीरूपगोस्वामिपाद। '**स्थापितं येन भूतले**' जानकर भूतल पर स्थापित किया श्रीरूप ने।

कुंज-निकुंज-निभृत निकुंज

कुंज तक सखा-सखी सभी का प्रवेश रहता है। निकुंज में सखा नहीं जा सकते। सखियां-मंजरियां-प्रिया-प्रियतम निकुंज में जाते हैं।

निभृत निकुंज में केवल प्रिया-प्रियतम जाते हैं। सखियां पहले से ही वहाँ शय्या आदि, पुष्प, चन्दन, भोजन की व्यवस्था करके रख देती हैं एवं बाहर आ जाती हैं। यद्यपि निभृत निकुंज की चादर, जल, शैया भी सखी रूपा ही कही गयी हैं।

सखियां व मंजरियां निभृत निकुंज में बने 8 झरोखों से विलास सुख का दर्शन करती हैं और मंजरियां वहीं उनके आनुगत्य में सेवा के लिये तैनात खड़ी रहती हैं। राधाजी से देहमात्र भेद है मंजरियों का। जैसा सुख राधाजी को प्राप्त होता है—वही सुख शतगुणा होकर मंजरियों को भी अनुभव

होता है। यहाँ तक कि प्रियाजी को यदि नख-चिह्न बनता है तो वह नखचिह्न मंजरियों के शरीर पर भी बन जाता है।

इसी प्रकार निभृत निकुंज में यदि प्रियाजी को प्यास लगती है तो मंजरी को, विशेषकर जल सेवा वाली मंजरी को पता लग जाता है। पानी मांगना नहीं पड़ता। वह शीघ्रता से जलकलश लेकर निभृत निकुंज में जाती है—जल सेवा करके बाहर निकुंज में आ जाती है।

ब्रज विलास स्तव में ऐसा भी वर्णन आता है कि कभी-कभी बड़ी प्यारी सी किसी मंजरी को प्रियाजी अपनी शैया पर ही चादर से ढककर सुलाये रखती हैं। कभी चादर से ढककर निकुंज के एक कौने में छिपाये रखती हैं। कभी अपने पर्यंक के नीचे छिपा देती हैं—वह ऐसा इसलिये करती हैं कि श्यामसुन्दर के विरह समय में- ये मंजरियां उस विलास का वर्णन प्रियाजी से करके उनके विरह को कुछ शान्त कर सकें।

ये मंजरियां **प्राण सखी-नित्य सखी** स्वरूपा हैं—इसलिये हरक्षण हरपल प्रियाजी के साथ ही रहती हैं।

एकादश भाव का क्रम

* जीवरूपी साधक को सर्वप्रथम नाम-दीक्षा दी जाती है। नामनिष्ठ नामग्रहणकारी सन्त या गृहस्थ ये दीक्षा दे सकते हैं। मन्त्र दीक्षा इनसे या अन्य गुरुदेव से भी ली जा सकती है।

- अन्तःकरण शुद्धि होने पर दीक्षा की योग्यता दिखने पर गुरुदेव द्वारा श्रीगोपालमन्त्र एवं अन्य श्रीराधा मन्त्र, गुरुदेव मंत्र, महाप्रभु, नित्यानन्द, अद्वैत, गदाधर, श्रीवास आदि पंचतत्त्व मंत्र, वृन्दादेवी मन्त्र, षड् गोस्वामि मंत्र, अष्टसखी मंत्र, अष्टमंजरी मंत्र, आदि प्रदान किये जाते हैं।
- जिससे श्रवण किया, वह श्रवणगुरु—ये अनेक हो सकते हैं। जिसने शिक्षा दी- वह शिक्षागुरु—ये भी अनेक हो सकते हैं। जिसने मंत्र दीक्षा दी—वह दीक्षागुरु—ये एक ही होते हैं।
- मंत्र दीक्षा के बाद दो दीक्षाऐं और होती हैं—एक तो 'वेश' प्रदान करके वेश दीक्षा दी जाती है अर्थात् बाबा जी बना दिया गया।
- दूसरा—दीक्षा के बाद साधक के परिपक्व होने पर उसे प्रणाली एवं स्वरूप दिया जाता है—यह गृहस्थ एवं बाबा दोनों को दिया जाता है। प्रणाली में गुरुपरम्परा एवं गुरुजन का मंजरी नाम, सेवा, कुंज का नाम आदि दिया जाता है और स्वरूप में साधक को एकादश भाव दिया जाता है—जिसका अनुभव अभ्यास से साधक को होने लगता है, वह अपने आपको मंजरी भाव में भावित करके अन्तश्चिन्तित देह से मानसी सेवा करता है। **मंजरी का वेश कभी भी नहीं बनाना है।**

एकादश भाव

1. **नाम**—मंजरी को नाम दिया जाता है जैसे **'गुणमंजरी'**
2. **रूप**—मदनानन्द मोहिनी स्वरूप है—काला, गोरा आदि
3. **वयस**—लगभग 10 से 13 वर्ष। विवरण **मानसी सेवा ग्रन्थ** में है।
4. **वेश**—वस्त्र नीले या पीले या अन्य प्रसादी अलंकार, माला आदि
5. **सम्बन्ध**—सेव्य सेवक सम्बन्ध। क्योंकि जीवेर स्वरूप हय नित्य कृष्णदास। शरीर में भी दास, शरीर शान्ति के बाद भी दास-(दासी)। अन्तश्चिंतित देह में भी दासी
6. **यूथ**—मंजरी की यूथेश्वरी (ग्रुप लीडर) भी होती है वह कौन है यह बताया जाता है।
7. **आज्ञा**—किसकी आज्ञा माननी है।
8. **सेवा**—चँवर, पानी, सफाई, पुष्प आदि एक विशेष सेवा बताते हैं, लेकिन समयानुसार सभी सेवा करनी है।
9. **पराकाष्ठा**—श्रीरूप आदि मंजरीगण की भांति मैं भी नित्य किंकरी हूँ। इस भाव की पुष्टि।
10. **पाल्यदासी**—मैं प्रियाजी द्वारा पलित पोषित दासी हूँ।
11. **निवास**—वृन्दावन, राधाकुण्ड, नन्दगाँव आदि कृष्णलीला स्थलियों की रहने वाली हूँ तथा मेरी एक अमुक नाम की पृथक् कुंज है। जो जावट या बरसाना में है।

यह भाव श्रीगुरुदेव द्वारा दिया जाता है—दीक्षा की परिपक्वता के बाद। इसी चिन्तन से अपने आपको मंजरी स्वरूप में देखकर सेवा-भावना होती है।

सावधान !

नामदीक्षा तो भले ही रेबड़ी की तरह बांट दी जानी चाहिये। **मंत्रदीक्षा** में पात्रता, आहार, व्यवहार, विचार, योग्यता का ध्यान रखते हुए दीक्षा दी जानी चाहिये। दीक्षा एक कन्या के विवाह की तरह है। 12 वर्ष में कन्या का विवाह नहीं होगा—परिपक्व होने पर दीक्षा होनी चाहिये। सेवा और **प्रणाली** एवं **मंजरी स्वरूप** तब देना चाहिये जब साधक में स्त्री-पुरुष का भान समाप्त हो जाये। क्योंकि प्रिया जी की सब सेवा करनी है। यदि विकार आये तो इस भाव से बाहर आकर कुछ गैप देकर पुनः प्रयास करना चाहिये।

रति के प्रकार

श्रीचैतन्य महाप्रभु से पूर्व तक तीन प्रकार की रति का वर्णन रस शास्त्र में मिलता है—

1. **साधारणी रति**—कुब्जा की है। कृष्ण से स्वसुख पाने की इच्छा है।
2. **समञ्जसा रति**—द्वारका में रानियां—अपने एवं श्रीकृष्ण के सुख में सामंजस्य बनाकर रखती हैं।

3. **समर्था रति**—श्रीराधारानी सहित समस्त ब्रजगोपियां श्रीकृष्ण के सुख में ही समर्पित रहती हैं। अपने सुख का लेश भी नहीं। कृष्ण को सुख देने की सामर्थ्य गोपीगण आदि में ही है।

इसके बाद अनन्त ब्रह्माण्ड अनन्त अवतारों द्वारा कभी भी प्रदान न की जाने वाली एक और रति एवं भाव का आविष्कार किया श्रीचैतन्य महाप्रभु ने और जीव जगत् को चमत्कृत किया है, वह है—

4. **भावोल्लासा रति**—श्रीराधारानी के भाव से उल्लसित रति और मंजरी भाव। यह रति भी नवीन है और मंजरी भाव भी नवीन है।

केवल गौड़ीय ही मंजरीभाव उपासना कर सकते हैं

यह उपासना विशेष भाव आधारित है—अन्य सम्प्रदायों में मंजरी भाव नहीं है। अतः चैतन्य महाप्रभु—मतानुयायियों का ही प्रवेशाधिकार है मंजरी भाव में। गौड़ीय परम्परा में भी जो श्रीचैतन्य महाप्रभु को कान्तभाव, नदिया नागर भाव या केवल श्रीकृष्णरूप में भजते हैं उन्हें मंजरी भाव प्राप्ति अति दुर्लभ है। हाँ, जो श्रीचैतन्य महाप्रभु को श्रीराधाभाव भावित अन्तर्कृष्ण बहिर्गौर के रूप में भजते हैं—वे ही साधना—चिन्तन में मंजरी भाव को आत्मसात कर पाऐंगे।

सेवा ही प्राण

एक मंजरी प्रियाजी को महावर लगाने से पूर्व प्रार्थना करती है—हे प्रियाजी! आप ऐसी कृपा करना कि आपकी सेवा से मुझमें आनन्द का उद्रेक न हो जाय। आनन्द आया तो अश्रु, पुलक, कम्प होगा और इन सबसे आपकी सेवा में बाधा होगी। सेवा ही इनका प्राण है। अपना आनन्द व सुख नहीं चाहिये इन्हें। ऐसा सुख जो सेवा को बाधित करे वह सुख नहीं, आनन्द नहीं- वह तो बाधा है।

एक तरफा नहीं

यह बात मंजरियों में तो है ही, प्रियाजी भी पूरी तरह से चेष्टाशील रहती हैं कि मंजरियों को कैसे सुख मिले ? मंजरियां जब श्रृंगार-वस्त्र आदि की सेवा करती हैं तब प्रियाजी ने मंजरियों को पूर्ण स्वाधीनता दी हुयी है- वे जो वस्त्र पहनाऐं- जैसे बाल बनायें—जैसा श्रृंगार करें—प्रियाजी बीच में नहीं बोलतीं। क्योंकि प्रियाजी मंजरियों के सुख में सुखी और मंजरियां प्रियाजी के सुख में सुखी।

आश्रय और विषय

ये श्रीराधारानी गोपियां एवं अन्यतम मंजरियां प्रेम का आश्रय हैं और प्रेम का विषय हैं श्रीकृष्ण। विषय अर्थात् प्रेम

यदि हो सकता है तो एकमात्र कृष्ण से ही हो सकता है। लौकिक-प्रेम तो प्रेम की परिभाषा में ही नहीं आता- वह स्वार्थ ही है। या काम है। आत्मेन्द्रिय प्रीति वांछा तारे बलि काम। कृष्णेन्द्रिय प्रीति वांछा धरे प्रेम नाम। चै.च.

- मंजरी श्रीकृष्ण को भगवान् नहीं मानती हैं। अपना सर्वाधिक प्रिय, अपने सर्वाधिक निकटतम मानती हैं और अपने को किशोरी जी की दासी मानती हैं।
- मंजरी राधारानी के समान छोटी एक राधारानी ही हैं एक स्फुलिंग जैसी हैं। मंजरी सखियों से भी अधिक निपुण एवं स्फूर्ति युक्त हैं।
- श्रीराधारानी कृष्ण के विरह में थोड़ी उदास हैं तो मंजरियां शत गुना उदास हो जाती हैं। प्रियाजी श्रीकृष्ण के आने पर आनन्दित होती हैं तो मंजरियां शतगुणा आनन्दित होती हैं। तद्भाव भावित एकात्म स्वरूप हैं मंजरी।
- 'श्रीमती समा सभे देह भेद मात्र'।
- एक प्राण एक आत्मा एक मात्र तंत्र। चै.च.
- सखीभाव, सहचरी भाव पहले से था, लेकिन मंजरी नाम, मंजरी भाव, इनकी भावोल्लासा रति को सर्वप्रथम सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड में श्रीचैतन्य महाप्रभु कृपा से श्रीरूप सनातन आदि ने प्रस्तुत किया।

- जिस प्रकार तुलसी की मंजरी मुरझा जाती है जल के अभाव में एवं जल देने से वह ठीक हो जाती है—वैसे ही राधारानी के दुखी होते ही मंजरी दुखी हो जाती है। मंजरी को देखने से राधारानी की स्थिति का ज्ञान हो जाता है—इतना साम्य है—राधारानी एवं मंजरी में। शायद इतना साम्य सखी सहचरी में नहीं। पूर्ण एकात्म है।
- महाप्रभु ने स्वयं भी मंजरी भाव का आस्वादन किया— उन्होंने कहा– तुम मुझे कहां ले आये, मैं अपनी यूथेश्वरी के कहने से पुष्प चयन करके ला रही थी, वह कहां गया– ये मंजरी भाव आस्वादन ही है श्रीचैतन्य महाप्रभु का। चैतन्यचरितामृत ग्रन्थ देखिये।
- श्रीराधारानी की एक स्फुरण, स्पार्किंग है मंजरी। ये अगम्य है, अचिन्त्य है। कृपा साध्य है। श्रीकृष्ण भी इन मंजरियों से विनय करते हैं जब राधारानी से मिलना होता है।
- राधारानी चाहती हैं मंजरियों को कैसे सुख मिले और मंजरियां चाहती हैं श्रीराधारानी को कैसे सुख मिले। योगमाया श्रीराधारानी को प्यास लगवा देती हैं, इसका आभास मंजरियों को होता है गर्मी भी लगने लगती है प्रियाप्रियतम को। बस मंजरियां पंखा झलने लगती हैं, जल की सेवा करने लगती हैं। दोनों का काम बन गया। मंजरी को सेवा मिली। प्रियाप्रियतम को जल मिला—हवा

मिली। प्रियाप्रियतम को जो सुख मिला जल और हवा से, वही सुख शतगुणा होकर मंजरी को मिला। मंजरी को प्रसन्न देखकर राधारानी भी प्रसन्न हो गयीं। और राधारानी की प्रसन्नता से श्रीकृष्ण भी प्रसन्न हुए।

* मंजरी हैं तो राधास्नेहाधिका लेकिन राधा के प्राणनाथ हैं श्रीकृष्ण—इसलिये मंजरियों के भी प्राणनाथ हैं श्रीकृष्ण। राधा के स्वामी हैं श्रीकृष्ण। इसलिये मंजरी के भी स्वामी हैं श्रीकृष्ण। लेकिन स्वामिनी हैं श्रीराधा ही।
* राधा-राधा बोलने से राधा प्रसन्न नहीं होती श्रीकृष्ण प्रसन्न होते हैं। श्रीकृष्ण बोलने से श्रीराधा अधिक प्रसन्न होती हैं। इसलिये गौड़ीय परम्परा में—

हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे
हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे

का जप एवं संकीर्तन किया जाता है जिससे राधा एवं कृष्ण दोनों ही क्षण-प्रतिक्षण प्रसन्न होते हैं। इस महामन्त्र का साधारण हिन्दी अर्थ इस प्रकार है—

राधा कृष्ण राधा कृष्ण कृष्ण कृष्ण राधा राधा
राधा रमण राधा रमण रमण रमण राधा राधा

हरे = राधा। राम = रमण करने वाले।

श्रीचैतन्य महाप्रभु श्रीराधाकृष्ण मिलित विग्रह हैं। जब श्रीहरिदास ने निर्याण किया तो श्रीचैतन्य बहुत दुखी होकर

बोले कि—हरिदास चला गया, अब मुझे हरिनाम कौन सुनायेगा ? तीन लाख नाम लेने वाला हरिदास, मेरा प्रिय हरिदास आज चला गया।

नामकारी होने से ही श्रीहरिदास के प्रति यह प्रियता ही थी कि श्रीहरिदास का निर्याण उत्सव स्वयं श्रीचैतन्य ने किया। अपने माता-पिता का उत्सव भी ऐसे नहीं किया। इसमें महामन्त्र के प्रति प्रेम एवं प्रसन्नता का भाव ही मुख्य है।

❀ चै.च. 3/18/77-79 में महाप्रभु उक्ति है—

कालिन्दी देखिया आमि गेलाम वृन्दाबन
देखि जलक्रीड़ा करे व्रजेन्द्रनन्दन
राधिकादि गोपीगण संगे सब मेलि
यमुनार जले महारंगे करे केलि
तीरे रहि देखि आमि सखीगण संगे
एक सखी देखाय मोरे एई सब रंगे।

श्रीचैतन्य महाप्रभु ने भी मंजरी रूप में आस्वादन किया है इस भाव का। देखिये श्रीचैतन्यचरितामृत।

दुर्लभतम भाव सहज उपलब्ध

जो भाव महाप्रभु के पूर्व तक अप्राप्त था। श्रीचैतन्य महाप्रभु ने उसे प्रकाशित किया। स्वयं आस्वादन किया, अपने गोस्वामिगणों में शक्ति संचार करके उनसे प्रचारित करवाया—

नवीनतम भावोल्लासा रति युक्त मंजरी भाव हम जैसे पतितों को सहज प्राप्त है और उसके लिये कितना सरल सहज साधन 'महामंत्र' हरे कृष्ण में शक्ति संचारित करके वायुमण्डल में छोड़ दिया।

निरन्तर श्रद्धापूर्वक महामंत्र नाम जप करने से दीक्षा, प्रणाली, कृपा प्राप्त होती है और इस देह से हम मंजरी स्वरूप से मानसिक सेवा सम्पादन करते हैं, और शरीर पात के बाद चिन्मय देह प्राप्त कर श्रीराधारानी की मंजरी भाव से सेवा करके मानव जीवन के परम लक्ष्य को पा जाते हैं।

एक और विशेष बात है कि आजकल इससे श्रेष्ठ भाव एवं रति का प्रकाश या परिचय किसी सम्प्रदाय, पन्थ–ग्रन्थ में प्राप्त नहीं हुआ। जिस प्रकार परिपूर्णतम व्रजेन्द्रनन्दन कृष्ण–श्रीचैतन्य महाप्रभु ही परतत्त्व की सीमा हैं—वैसे ही उनके द्वारा प्रचारित यह मंजरी भाव एवं भावोल्लासा रति साध्य साधन की सीमा है। इससे आगे कुछ नहीं–कुछ नहीं।

मंजरी भाव के विषय में और अधिक सुनने के लिये—यू ट्यूब पर srisri108srivinodbabajimaharaj के Video- 20/12/22 तथा 03/01/2020 एवं 11/11/21 तथा 16 दिसम्बर 2019 के प्रवचन सुनकर आनन्द प्राप्त कर सकते हैं।